समकालीन हिंदी और मराठी दलित कहानियों में
चेतना तथा संघर्ष

(Samkalin Hindi aur Marathi dalit kahaniyon men chetna tatha sangharsh)

एम॰फिल॰ हिंदी उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध सारांश

सत्र- 2014-15

शोधार्थी

जयप्रकाश राम

पंजीयन सं. 2014/02/205/007

ज्ञान शांति मैत्री

हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग

साहित्य विद्यापीठ

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

(संसद द्वारा पारित अधिनियम १९९७ क्रमांक ३ के अंतर्गत स्थापित)

पोस्ट : हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा - ४४२००५ (महाराष्ट्र) भारत

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	अध्याय के नाम	पृष्ठ संख्या
1	**अध्यायएक : भारतीय सामाजिक संरचना और दलित**	01-21
	1.1-भारत की सामाजिक संरचना : वर्णव्यवस्था एवं जाति व्यवस्था	01-06
	1.2-समाज में दलितों का उत्पीड़न और शोषण	07-16
	1.3-समाज में दलितों का संघर्ष और स्वरूप	17-21
2	**अध्याय दो: हिंदी तथा मराठी दलित कहानियां**	22-46
	2.1-दलित साहित्य का अर्थ एवं अवधारणा	22-28
	2.2-हिंदी दलित कहानियों में दलितों की स्थिति	29-35
	2.3-मराठी दलित कहानियों में दलितों की स्थिति	36-46
3	**अध्याय तीन : हिंदी एवं मराठी दलित कहानियों में चित्रित शोषण का स्वरूप**	47-69
	3.1-सामाजिक शोषण	47-53
	3.2-राजनीतिक शोषण	54-62
	3.3-धार्मिक शोषण	63-64
	3.4-आर्थिक शोषण	65-69
4	**अध्याय चार : हिंदी एवं मराठी दलित कहानियों का शिल्पगत वैशिष्ट्य**	70-78
	4.1-शैली	70-77
	4.2-प्रतीक विधान	78-78

भूमिका

आजादी के बाद दलितों के जीवन में कुछ सकारात्मक परिवर्तन हुआ है। सरकारी नौकरियों में जाने को आरक्षण मिला। भूमंडलीकरण, उदारीकरण व निजीकरण की व्यवस्था संपत्ति को फिर से कुछ विशेष लोगों के हाथों में ही केन्द्रित करती रही है। निजीकरण की नीतियों के चलते साधनहीन दलित के विकास के रास्ते लगभग बंद हो रहेहैं। इससे समान आर्थिक व्यवस्था, सामाजिक समानता व सामाजिक न्याय की कल्पना नहीं की जा सकती। विश्वबैंक, अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोश और विश्वव्यापार संगठन की विख्यात तिकड़ी द्वारा निर्देशित भूमंडलीकरण, उदारीकरण और निजीकरण की नीतियों को ब्राह्मणवाद का नया संस्करण कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगा। जो दलितों को ज्ञान से, शक्ति से और संपत्ति से वंचित कर देगा। इसी काल में ज्योतिबा फुले, डॉ. भीमराव अंबेडकर, नारायण गुरु, पेरियार जैसे संघर्षशील बुद्धजीवियों ने अपनी रचनाओं व जीवन संघर्षों से वंचित, पीड़ित, शोषित दलित आवादी की मुक्ति संघर्ष को दिशा प्रदान की। इन महान पुरुषों से ही प्रभावित होकर समकालीन मराठी व हिंदी के दलित साहित्यकारों ने देश में घटित हो रही घटनाओं को आधार बनाकर अपनी रचनाओं को स्वर प्रदान किया है। इन साहित्यकारों ने दलितों के जीवन संघर्ष को भोगा है और जिया है, जिसके कारण इनकी रचनाओं में वह सब देखने को मिलता है जिस पर सवर्ण रचनाकारों का कभी ध्यान ही नहीं गया। आज जब ये दलित रचनाकर अपनी वंश परंपरा के पीड़ा को पाठक वर्ग के सामने ला रहे हैं तो ब्राह्मणवादी रचनाकारों को यह सब मात्र एक कोरी कल्पना लग रही है जिसको खारिज करने के लिए विविध रास्ते अख़्तियार कर रहे हैं।लेकिन दलित साहित्य का दायरा इतना बढ़ चुका है कि इसके रास्ते को सीमित नहीं किया जा सकता। आज दलित साहित्य के पाठक समाज में इतना हो गए हैं कि प्रतिदिन एक नई रचना की आस लागाए इन रचानाकारों की राह देख रहे हैं।

वर्तमान समय में हिंदी दलित साहित्य में भी ऐसी कोई विधा नहीं बची है जिस पर दलित लेखकों ने अपनी कलम न चलाई हो। प्रारम्भ में हिंदी और मराठी दलित साहित्यकारों ने आत्मकथा लिखना शुरू किया लेकिन शीघ्र ही इतनी तेजी से इस साहित्य का अप्रत्यासित विकास हुआ कि विभिन्न विधाओं में अनवरत रूप से लेखन कार्य आज भी जारी है। जो पाठकों को नई दृष्टि देने में पूरी तरह से सक्षम है। हालांकि मराठी भाषा के साहित्य में दलितों के जीवन को आधार बनाकर लेखन कार्य सन् साठ के दशक में ही प्रारम्भ हो गया था जबकि हिंदी साहित्य में यह बात अस्सी के दशक से ज़ोर पकड़ता है।

प्रस्तुत लघु शोधप्रबंध को कुल चार अध्यायों में विभाजित किया है। पहला अध्याय 'भारतीय सामाजिक संरचना और दलित' नाम से बनाया, जिसको पुन: तीन उप अध्याय में विभाजित किया गया है । पहले उपाध्यायमें भारत में वर्ण व्यवस्था के शुरुआती दौर को दिखाया है। इस उपाध्यायमें किस तरह से समाज का संचालन होता था और बाद में उसी समाज को अपने हित के लिए समाज को वर्ण और उपजाति में विभाजन

किया गया। दूसरे उपाध्यायमें 'समाज में दलितों का उत्पीड़न और शोषण' दिखाने का प्रयास किया गया है। दलितों का किस तरह से शोषण वैदिक काल से लेकर आज तक होता आ रहा है, इस बात का मैंने इस उपाध्यायमें जिक्र किया है। तीसरे उपाध्यायमें 'समाज में दलितों का संघर्ष और स्वरूप' की बात की है। वैदिक काल में जब वर्ण का विभाजन होता है तो ब्राह्मण अपने आप को समाज में सबसे श्रेष्ठ बताते हुए अपना जन्म विराट पुरुष के मुख से बताया। क्षत्रियों को दूसरे नंबर पर रखा और उनका कार्य रक्षा करना निर्धारित किया। तीसरे स्थान पर वैश्यों को रखा और उनका कार्य 'व्यापार' निर्धारित किया। बचे दबे-कुचले दलित तो उन्हें चौथे स्थान पर रखते हुए 'शूद्र' नाम से संबोधित किया और उनका कार्य अपने से बड़े इन तीन वर्णों का सेवा करना निर्धारित किया, जिसको लेकर ये दलित आज भी समाज में संघर्ष कर रहे हैं।

फिर इस शोध-प्रबंध के दूसरे अध्याय को तीन उपध्याओं में बांटा। पहले उपाध्याय में दलित साहित्य के अर्थ की बात करते हुए उसके अवधारणा की बात की। फिर दूसरे उपाध्याय में'हिंदी कहानियों में दलितों की स्थिति' को लेकर चर्चा किया। जिसमें यह दिखाने का प्रयास किया कि दलित रचनाकार अपनी कहानियों के माध्यम से किस तरह से दलितों के बदलते शोषण को पहचाना है और अपनी कहानियों में किस तरह से अभिव्यक्त किया है।इस बात को उनकी कहानियों के माध्यम से दिखाने का प्रयास किया है। पुन: तीसरे उपाध्याय में 'मराठी कहानियों में दलितों की स्थिति' को लेकर आगे बढ़ा गया, जिसमें हमने यह दिखाने का प्रयास किया कि मराठी साहित्यकार दलितों के बदलते शोषण के स्वरूप को किस तरह से लेकर आगे बढ़ते हैं और कहाँ तक सफलता हासिल कर पाते हैं।

इस शोध-प्रबंध के तीसरे अध्याय को 'हिंदी एवं मराठी दलित कहानियों में चित्रित शोषण का स्वरूप' नाम देते हुए दोनों भाषा के समकालीन दलित कहानियों को लेकर तुलना किया गया है। इस आधार पर मैंने इस अध्याय को तीन उप- अध्यायों में विभाजित करते हुए पहले उपाध्याय में 'सामाजिक शोषण' को दिखाया है। ये समकालीन कहानीकार दो अलग भाषा और क्षेत्र के हैं और अपने कहानियों में उसी दलित की बात दोनों करते हैं लेकिन शोषण का जो रूप हिंदी भाषी समाज में है वहीं रूप मराठी साहित्यकारों के यहाँ भी मिलता है जबकि मराठवाड़ा में दलितों के हित को लेकर सबसे पहले आंदोलन चलाए गए। इस चौथे अध्याय के दूसरे उपाध्याय में 'राजनीतिक शोषण' को लेकर बात किया गया है। जिसमें आज पूरे भारत को स्वतंत्र हुए लगभग अड़तालीस साल बीत चुके हैं और इन अड़तालीस सालों में भी दलितों की भारतीय राजनीति में क्या योगदान रहा है, कहानियों के माध्यम से दिखाने का प्रयास किया है। तीसरे उपाध्याय में धार्मिक एवं आर्थिक शोषण को लेकर बात किया गया है। जिसमें हमने यह दिखाने का प्रयास किया है कि जब प्राचीन काल से समाज का विभाजन हुआ, तभी से दलितों का धर्म के नाम पर शोषण होना प्रारम्भ हो गया। मंदिर में दलित पूजा नहीं कर सकता, भगवान का दर्शन नहीं कर सकता और सवर्णों के तालाब से पानी

नहीं पी सकता, इस धार्मिक शोषण को दिखाने का प्रयास किया है। जब धर्म का प्रचार बढ़ा तभी से दलितों का आर्थिक शोषण भी प्रारंभ हो गया।

इस शोध-प्रबंध के चौथे अध्याय में दोनों भाषा के साहित्यकारों के शैलीगत विशेषता की बात की है। जब क्षेत्र बदलता है तो भाषा भी बदल जाती है, जिसके बारे में एक प्रसिद्ध कहावत है "कोस-कोस पर पानी बदले, चार कोस पर बानी" यह कहावत सही भी है। मराठी भाषा के जो दलित साहित्यकार हैं, उनकी रचनाओं का सही आस्वाद एक मराठी-भाषा का मर्मज्ञ ही ले सकता है। इस तरह से मैंने दलितों के उस भाषा को देखने का प्रयास किया, जो उनके गली-मोहल्लों में प्रचलित है। दलितों के इसी भाषा को लेकर आज गैर दलित रचनाकर उनके भाषा को अश्लील भाषा की संज्ञा देते हुए तरह-तरह के सवाल उठाते हैं।

लघुशोध-प्रबन्ध को उसकी परिणिति तक पहुंचाने के लिए सर्वप्रथम मै अपने शोध-निर्देशक प्रो. कृष्ण कुमार सिंह का आभार व्यक्त करता हूँ जिनके निर्देशन से मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला, जिसके कारण यह लघु शोध प्रबंध पूरा हो सका है। मेरे अध्ययन के दौरान विभिन्न व्यक्तियों ने मेरी सहायता की उनके प्रति भी मै बहुत आभार व्यक्त करता हूँ।

अपने विभागाध्यक्ष प्रो सूरज पालीवाल जी के प्रति श्रद्धापूर्वक आभार प्रकट करता हूँ। इसके अलावा मै विभाग के गुरूजनों का मै हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। डॉ. सुनील सुमन सर का विशेष आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने मुझे समय-समय पर सामग्रियाँ उपलब्ध कराई और मुझे उत्साहित किया। मेरे वरिष्ठ शोधार्थी जिन्होंने लगातार मेरी सहायता की और शोध की बारीकियों से मुझे परिचित कराया उनका भी विशेष आभार जिनमें शैलेश कुमार, रवीद्र कुमार यादव, रूम पार्टनर भाई रमेश कुमार, रामचंद्र, लखन लाल, सुरेश सिंदे प्रेम कुमार, धीरेंद्र यादव, धीरज उपाध्याय और भाभी जाह्नवी, चेतन सिंह,देविदास, हिमांशु, राजेंद्रराम, अनुसुमन बड़ा, ललिता, अंजली, बिंदा भाभी, दीपक कुमारी, सत्यनारायन,तथा समस्त सहपाठी बंधुओ का आभार प्रकट करता हूं। मै अपने माता-पिता और अपने भाई का भी आभार प्रकट करना चाहता हूँ जिन्होने मुझे यहाँ तक पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया।

अंत में मैं उन सभी मित्रों का आभार प्रकट करना चाहता हूं जिन्होने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मेरेशोध लेखन में महत्वपूर्ण योगदान दिया॥